वर्ष : २१ अङ्क : ९

दिसम्बर १९९७ ई०

जैन भवन

तित्थयर

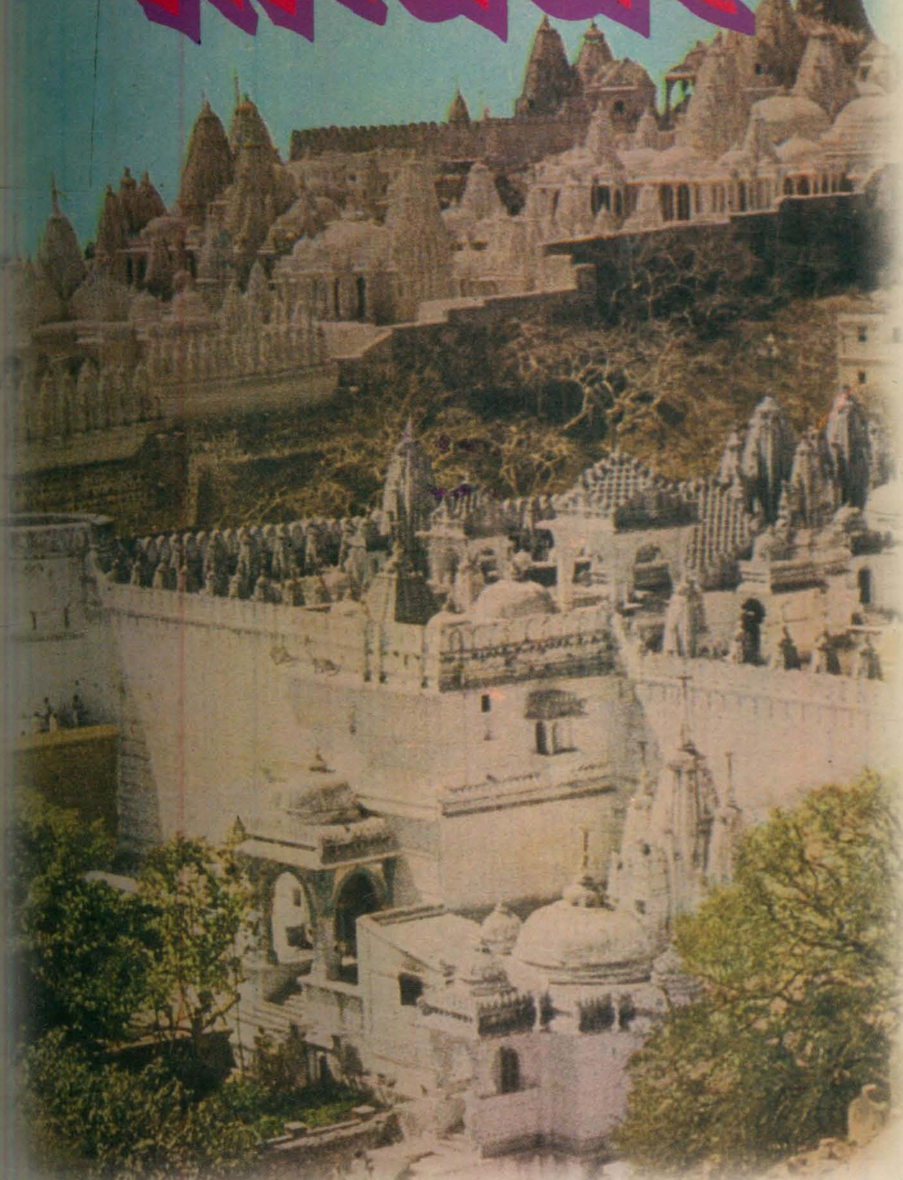

1209

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of Rice Brain, D.O.B Mustard D.O.C, Neem deoiled Powder, ground nut Deoiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P)
Ph : 42017/397/073
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790

Registered Office
143, Cotton Street
Cal - 700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, Indian Exchange Place
Calcutta - 700 007
Ph : 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SO IN IN
Fax : 2200248

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्र
वर्ष २१ : अंक ९
दिसम्बर १९९७

☐

संपादन
राजकुमारी बेगानी
लता बोथरा

☐

आजीवन : एक हजार रुपये
वार्षिक शुल्क : पचपन रुपये
प्रस्तुत अंक : पांच रुपये

☐

प्रकाशक
जैन भवन
पी-२५, कलाकार स्ट्रीट,
कलकत्ता-७००००७
दूरभाष : २३८२६५५

☐

मुद्रक
अनुप्रिया प्रिन्टर्स
६ ए, बड़ौदा ठाकुर लेन,
कलकत्ता-७

सूची

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका	२५१
श्रावक जीवन	२६१
राजा सम्प्रति	२६७
पुस्तक समीक्षा	२७२

OUR CUSTOMERS ARE OUR MASTERS

You can safely choose Oodlabari Tea for finest CTC teas, flavoury leaf teas and health giving Green Teas at reasonable prices. You can also phone at our Office for any assistance in selection of teas.

Insist on purchasing following packets

Anyone desirous of taking dealership for our teas may kindly contact at following address :

THE OODLABARI COMPANY LIMITED

NILHAT HOUSE, 6TH FLOOR

11 R. N. MUKHERJEE ROAD, CALCUTTA 700 001

Calcutta office Phone : 248-1101, [illegible], 248 9515

प्राकृत व्याकरण प्रवेशिका

डॉ० सत्यरंजन बनर्जी

पूर्वानुवृत्ति

४. कुछ शब्द ऐसे हैं जिसके साथ अनुस्वार होने के बाद दीर्घ स्वर वर्ण का ह्रस्व हो जाता है। जैसे कि माला-मालं, नई-नइं, बहू-बहुं, इत्यादि।

अनुस्वार के विषय में केवल इतना ही समझना उचित है कि वर्गीय पंचम नासिक्य वर्ण और म् के बाद सभी जगह पर अनुस्वार होना ही ठीक है।

अनुनासिक वर्ण

प्राकृत में अनुनासिक वर्ण ज्यादा नहीं होता है। वर्गीय पंचम वर्ण तथा "म्" ही केवल अनुनासिक वर्ण के रूप में प्रचलित हो सकता है। इसका तात्पर्य यही है कि जहां हम लोग अनुनासिक वर्ण देखेंगे वहां हम लोग वर्गीय नासिक्य वर्ण की उपलब्धि करेंगे। किसी वर्ण के साथ इस तरह नासिक्य वर्ण के स्थान पर अनुनासिक वर्ण आ गया जैसे यमुना-जउँणा, चामुण्डा-चाउँण्डा, कामुक-काउँओ, अतिमुक्तक-अणिउँतय इत्यादि।

केवल शब्द में ही नहीं कोई विभक्ति में भी नासिक्य वर्ण के स्थान पर अनुनासिक वर्ण होता है। जैसे—हि, हिं, हिँ।

प्राकृत में नासिक्य वर्ण का प्रयोग ज्यादा नहीं होता है इसलिए ज्यादा शब्द भी नहीं मिलते हैं।

विसर्ग

प्राकृत में विसर्ग कभी नहीं होता है। अर्थात् विसर्ग का प्राकृत में लोप होता है। विसर्ग की दो तरह की प्रतिक्रिया होती है—

१. जब अकारान्त शब्द के बाद विसर्ग होता है तो विसर्ग के स्थान पर ओ होता है। जैसे सर्वतः प्राकृत में सव्वओ होता है।

२. अगर शब्द के बीच में विसर्ग होता है तो विसर्ग के स्थान पर जिस शब्द के पूर्व विसर्ग है उसका द्वित्व हो जाता है अर्थात् वह वर्ण पुनः आ जाता है। जैसे दुःख। ख के पूर्व विसर्ग है इसलिए विसर्ग के स्थल पर ख का आगम अथवा ख का द्वित्व होता है। अर्थात् दुःख शब्द प्राकृत में दुक्ख होता है। प्राकृत में दो महाप्राण वर्ण का संयुक्त वर्ण नहीं होता है। इसलिए एक वर्ण का अल्पप्राण होगा क्योंकि दो महाप्राण वर्ण साथ-साथ उच्चारण करने में कठिनाई होती है इसलिए एक वर्ण अल्पप्राण हो जाता है। साधारणतया प्रथम जो

महाप्राण वर्ण होता है उसका ही अल्पप्राण हो जाता है। अतएव दुःख प्राकृत में दुक्ख होता है। यह नियम प्राकृत में सभी संयुक्त वर्ण पर लागू होता है।

कभी ऐसा लगता है कि कुछ विभक्तियां ऐसी हैं कि ओ संस्कृत का तस् (=तः) प्रत्यय से आया हुआ है। जैसे वच्छाओं वास्तव में संस्कृत वृक्षतः रूप से आया है। इसलिए पंचमी को एक विभक्ति है ओकारान्त। जैसे वच्छाओ।

संस्कृत का ऋकारान्त शब्द प्राकृत में तीन प्रकार का होता है। अर, आर और उ। संस्कृत पितृ शब्द प्राकृत में पिअर और पिउ होता है।

ध्वनि-परिवर्तन

प्राकृत में ध्वनि का परिवर्तन दो तरह होता है। (१) स्वर का (२) व्यंजन का। स्वर में कुछ स्थलों पर ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ और दीर्घ के स्थान पर ह्रस्व होता है। व्यंजन में भी कुछ-कुछ व्यंजन-ध्वनि का लोप होता है। कुछ-कुछ व्यंजन ध्वनि का परिवर्तन भी होता है। इस विषय में कुछ नियम सूत्र रूप में वर्णित हैं :—

स्वर वर्ण का परिवर्तन

१. प्राकृत में संयुक्त वर्ण का पूर्व वर्ण ह्रस्व होता है अर्थात् संयुक्त वर्ण का पूर्व अक्षर दीर्घ अर्थात् आ, ई, ऊ, होता है तब अ, इ, उ, हो जाता है। यथा—(क) आ-अ-आम्रम्-अम्बं, ताम्रम्-तम्बं

(ख) ई-इ—मुनीन्द्रः मुणिन्दो, तीर्थम्-तित्थं

(ग) ऊ-उ—चूर्ण चुण्णो, ऊर्मि-उम्मि

२. यदि संयुक्त वर्ण का पूर्व वर्ण ए व ओ होता है तब ए व ओ का ह्रस्व रूप इ व उ होता है अर्थात् नरेन्द्रः-नरिन्दो, म्लेच्छः—मिलिच्छो। अधरोष्ठः—अहरुट्ठं, नीलोत्पलम्-नीलुप्पलं।

३. यदि संयुक्त वर्ण का पूर्व वर्ण ए व ओ होता है तब उसी ए व ओ को हमलोग ह्रस्व मानेंगे अर्थात् संयुक्त वर्ण के पूर्व ए व ओ ह्रस्व हो जाते हैं। जैसे ग्राह्य-गेज्झं, पिण्डं-पेंडं, तुण्ड-तोंडं, पुष्कर-पोक्खरं। इन सभी उदाहरणों में यद्यपि ए, ओ लिखा गया है, पर ये ए, ओ ह्रस्व है। वस्तुतः ए, ओ दीर्घ है लेकिन संयुक्त वर्ण के साथ रहने के कारण ये ह्रस्व हो गए हैं।

४. प्राकृत में संयुक्त वर्ण में एक का लोप होने पर पूर्व स्वर दीर्घ हो जाता है। यथा-पश्यति-पस्सइ-पासइ, कश्यपः-कस्सवो-कासवो, विश्रामः—विस्सामो-वीसामो, मिश्रम्-मिस्सं-मीसं, अश्वः—अस्सो-आसो, विश्वासः-विस्सासो-वीसासो, शिष्यः-सिस्सो-सीसो इत्यादि।

५. क. ऋ वर्ण का प्राकृत में अ, इ, उ और रि होता है। यथा— ऋ-अ घृतम्-घयं, तृणम्-तणं-कृतम्-कयं, वृषभः-वसहो, मृगः-मओ इत्यादि।

ऋ-इ-कृपा-किवा, हृदयम्-हियय, भृण्डारः-भिगारो, शृगालः-सिआलो इत्यादि।

ऋ-उ-ऋतुः उऊ, पृष्ठः-पुट्ठोः पृथिवी-पुहई, वृत्तान्तः बुत्तन्तो वृन्दं वुंदं इत्यादि।

ऋ-रि-ऋद्धि, रिद्धि—ऋक्षः-रिच्छो, ऋषिः रिसी आदि।

ख, कभी-कभी ऋ के स्थान पर आ, ए, और ढि भी होता है। यह नियम बहुत से शब्दों पर लागू नहीं है लेकिन कुछ शब्दों पर इसका प्रभाव है। यथा-कृशा-कासा मृदुकं-माउक्कं, मृदुत्वं-माउक्कं, गृहं-गेहं, आदृत-आढिओ।

६. प्राकृत में ऐ और औ के स्थान पर ए व ओ होता है। यथा-शैल-सेल, त्रैलोक्यं-तेलोक्कं, कैलाश-केलासों, कौमुदी-कोमुई, यौवन-जोव्वणं, कौशाम्बी-कोसम्बी।

व्यंजन का नियम

७. पद के मध्य स्थित अथवा अनादि और असंयुक्त क-ग-च-ज-त-द-प य-व प्राकृत में प्रायशः लोप होता है। यथा—क-तीर्थंकरः तित्थयरो, लोकः-लोओ, शकटं-सअडं। (य) नगः-नओ, नगरं-नयरं, मृगांकः-मयंको। (च) शची-सई, कचगृहः-कयग्गहो, (ज) रजतं-रययं, प्रजापतिः-पयावई, गजः-गओ। (त) वितानं-विआणं, रसातलं-रसाअलं जाति-जाई। (द) गदा-गया, मदनः-मयणो। (प) रिपुः-रिऊ, सुपुरुषः-सुउरिसो, (य) दयालुः-दआलू-दयालू नयनं-नअणं-नयणं। (व) लावण्यम्-लायण्णं विबुधः-विउहो, वडवानलः-वलयाणलो।

८. पद के मध्यस्थित अथवा अनादि और असंयुक्त ख-घ, थ, ध भ प्राकृत में ह होता है। यथा—(ख) शाखा-साहा, मुखम्-मुहं, मेखला मेहला, लिखति-लिहइ (घ) मेघः-मेहो, जघनम्-जहणं, माघः-माहो, (थ) नाथः-नाहो, मिथुनम्-मिहुणं, कथयति-कहेइ। (ध) साधु-साहू, बाधः-वाहो, बधिरः-बहिरो (फ) मुक्ताफलम्-मुक्ताहलं। (भ) नभः—नहं, स्वभावः-सहावो, शोभते-सोहइ।

९. पद के मध्यस्थित अथवा अनादि और असंयुक्त 'ट' को 'ड' हो जाता है। यथा—नटः-नडो, भटः-भडो, घटः-घडो, घटते-घडइ।

१०. पद के मध्यस्थित अथवा अनादि और असंयुक्त "ठ" को "ढ" हो जाता है। यथा—मठः-मढो, शठः-सढो, कमठः-कमढो, कुठारः-कुढारो, पठति-पढइ।

११. प्राकृत में पद के मध्यस्थित अथवा आदि असंयुक्त दन्त्य "न" मूर्धन्य "ण" हो जाता है। यथा नरः-णरो, नदी-णई, नयति, णेइ, कनकम्-कणयं।

क) यदि आदि में दन्त्य "न" हो तो वही दन्त्य "न" वैसे ही रह सकता है अर्थात् आदि में दन्त्य "न" हो सकता है। इसलिए नदी, नई, नेई, भी हो सकता है।

नोट :

वस्तुतः प्राकृत में आदि और अनादि, संयुक्त जैसे स्थलों पर मूर्धन्य "ण" होता है। अतएव प्राकृत में सभी स्थानों पर मूर्धन्य का ही प्रयोग करना चाहिए। किन्तु हेमचन्द्राचार्य के व्याकरण में लिखा है कि आदि दन्त्य "न" प्राकृत में हो सकता है। किन्तु अन्यान्य व्याकरण में लिखा है कि आदि और अनादि, संयुक्त और असंयुक्त सभी स्थलों पर मूर्धन्य "ण" होना चाहिए। हेमचन्द्राचार्य द्वारा जो कहा गया, उसके पीछे ऐतिहासिक विशेषता है। वस्तुतः अर्ध-मागधी भाषा में आदि स्थित दन्त्य "न" हो सकता है। इसी के साहित्य का प्रभाव प्राकृत भाषा पर भी आ गया। इसलिए सम्भवतः हेमचन्द्राचार्य ने ऐसा नियम बनाया है।

१२. प्राकृत में आदि य को ज होता है। यथा-यशः जसो, यमः जमो, याति-जाइ।

१३. प्राकृत में तालव्य "श" मूर्धन्य "ष" के स्थान पर दन्त्य "स" होता है। यथा—शब्दः-सद्दो, दश-दस, शोभते-सोहइ, कषायः-कसाओ, किन्तु मागधी प्राकृत में दन्त्य "स" के स्थान पर तालव्य "श" होता है।

संधि

संधि प्राकृत में बहुत सरल है। संस्कृत की तरह ऐसी जटल नहीं है। संस्कृत संधि के बहुत नियम प्राकृत में नहीं चलते हैं। प्राकृत में संधि के नियम निम्नलिखित प्रकार से हैं।—

१. ह्रस्व और दीर्घ स्वर तथा दीर्घ और ह्रस्व स्वर मिलकर एक गोष्ठीय दीर्घ स्वर होते हैं। अर्थात् अ + अ/अ + आ अथवा आ + आ/आ + अ-आ होता है। इ + इ/इ + ई अथवा ई + इ/ई + ई = ई होती है। उ + उ/उ + ऊ अथवा ऊ + उ/ऊ + ऊ-ऊ होता है। उदाहरण के तौर पर—देव + आलय-देवालय। चक्क + आअ = चक्काअ। इसि + इसि-इसीसि। सु + उरिस-सूरिस।

२. प्राकृत में अ/आ + इ/ई और अ/आ + उ/ऊ दोनों मिलकर क्रमशः ए और ओ होते हैं। जैसे—दिन + ईस = दिनेस, पुहवी + ईस-पुहवीस, अन्त + उवरि-अन्तोवरि।

२. क) किन्तु जब एकार और ओकार के बाद संयुक्त वर्ण रहता है, तब एकार के स्थान पर "इ" और ओकार के स्थान पर "उ" होता है। यथा-दणु अ + इंद = दणुएंद, दणु-इंद। णह + उल्लिहण = णहोल्लिहण, णहुल्लिहण।

नोट : एकार और ओकार का ह्रस्व रूप इकार और उकार होता है। इसलिये संयुक्त वर्ण के पहिले एकार और ओकार को क्रमशः इकार और उकार हो गया। अगर संयुक्त वर्ण के पहिले एकार और ओकार रहेंगे तब वही एकार और ओकार के ह्रस्व हो जाता है अर्थात् वही ए व ओ का हम लोग प्राकृत में ह्रस्व मानते हैं। यथा-पिंड-पेंड, तुंड-तोंड़,। ये ए और ओ प्राकृत में ह्रस्व हैं। यद्यपि ए और ओ का वास्तविक रूप दीर्घ ही है।

३. प्राकृत में संधि का निषेध—

दो भिन्न स्वरों की संधि प्राकृत में नहीं होती है। अर्थात् अ/आ + इ/ई और इ/ई + अ/आ, इ/ई + उ/ऊ और उ/ऊ इ/ई, ए/ओ + इ/ई, उ/ऊ + ए/ओ इस तरह की संधि प्राकृत में नहीं होती है।

४. विकल्प से संधि—

एक पद के अन्त और दूसरा पद के प्रारम्भ में जो स्वर वर्ण हैं वे स्वर वर्ण एक नम्बर नियम के अनुसार हों तब विकल्प से संधि हो सकती है। यथा वास + इसि = वासेसि, अथवा वासइसि। विसम + आयवो = विसमायवो अथवा विसमआयवो।

५. शब्द के बीच में यदि कोई व्यंजन वर्ण का लोप हो तो उसके बाद जो स्वर रह जाता है उस स्वर के साथ उसी पद में जो दूसरा वर्ण है उसकी संधि विकल्प से कदाचित् देखी जाती है। यथा-सु + उरिसो—सूरिसो। इस तरह संधि प्राकृत में उचित नहीं है। लेकिन कभी-कभी होती है।

६. क्रिया में व्यंजन के लोप के कारण से जो स्वर रह जाता है उसके साथ परवर्ती स्वर की संधि नहीं होती।

वस्तुतः प्राकृत में दो स्वर वर्ण का अवस्थान पास-पास हो तो तब भी उसकी संधि की आवश्यकता नहीं होती है। इसलिये प्राकृत में संधि के सभी नियम वस्तुतः विकल्प से हैं।

य-श्रुति

प्राकृत में य-श्रुति होती है। य-श्रुति की उत्पति किसी व्यंजन वर्ण के लोप के कारण से होती है। संस्कृत के आधार पर हम लोग जब विचार करते हैं तब देखते हैं कि कोई व्यंजन वर्ण जब अनादि अवस्था में होता है तब वह उसका कभी लोप होता है कभी नहीं भी होता है। जब लोप होता हैं तब लोप के स्थान पर जो स्वर है उस स्वर का अवस्यान होते हैं। अर्थात् रह जाता है। जैसे काक। अर्थात् क् + आ + क् + अ इस शब्द में जो द्वितीय क् है वह अनादि क् है। इसलिए वह अनादि क् प्राकृत में लोप हो जाएगा। लोप होने के बाद जो स्वर है अर्थात् यहां अ है वह रह जायेगा। यही नियम साधारणतया सभी जगह प्राकृत में है।

कौन से अनादि वर्ण का लोप होता है प्राकृत में इसके बारे में हेमचन्द्र के व्याकरण की सब अनादि क्, ग, च्, ज, त, द, प, य, व, (क-ग-च-ज त-द-प-य-वां प्रायो लुक् १.१७७) अर्थात् इस वर्ण का लोप होता है। यथा-काक-काअ, तीर्थंकर-तित्थअर, लोक-लोअ, नग-णअ नगर-णअर, काचगृह-काअगह, गज-गय-वितान-विआण, यदि-जइ मदन-मअण, रिपु-रिउ, दयालु-दआलु, विबुध-विउह इत्यादि।

जब अनादि क, ग, च, ज इत्यादि लोप होते हैं तब जिस स्वर का अवस्थान होता है वही स्वर रह जायेगा। किन्तु हेमचन्द्र ने बताया कि जब अ और आ के बाद जब अ रहेगा तब अ का उच्चारण य के जैसा होगा। अर्थात् उपयुक्त उदाहरण ऐसा भी हो सकता है। यथा-काय, तित्थयर, लोय णय, सयर, कायगग्ह, गय, वियाण मयण इत्यादि।

इकारान्त और उकारान्त शब्द के स्थान पर अ है तो वही अ य नहीं लिखा जाता है। यद्यपि कभी-कभी इकारान्त और उकारान्त शब्द के स्थान पर भी य आता है, वह य विकल्प रूप से कोई-कोई पण्डित लोग मान लेते हैं। वस्तुतः इकारान्त और उकारान्त शब्द के साथ य होना नहीं चाहिये। अगर होता है तो विशेष विधि से मान लेते हैं। सब ही प्राकृत व्याकरण के स्थान पर य-श्रुति मानी न जाती है।

अतः यह श्रुति हम लोग देखते हैं वह मुख्यतः अर्धमागधी भाषा में होती है। अर्थात भाषा में नअर जब लिखते हैं वही नअर अर्धमागधी में नयर रूप से होता है। इसका तात्पर्य यही है य लिखना श्रुति का कारण है अर्थात् अ और आ के बाद हम लोग जब पढ़ते हैं और बोलते हैं तब य की भांति एक ध्वनी आ जाती है। उसी को ही हम लोग श्रुति कहते हैं। मुख्यतः य श्रुति लिखने की नहीं है सुनने की है। हम यही तो सुनते हैं वही जब लिखते हैं तब य देखकर के लिखते हैं। अर्धमागधी में इसलिए इस श्रुति का प्रभाव ज्यादा से ज्यादा होता है।

य-श्रुति के विषय में केवल यही कहना है कि उपर्युक्त जो वर्ण है उसका लोप होने के बाद जो स्वर ध्वनि रह जाती है वहीं पर स्वर ध्वनि रहनी चाहिये। यो यह ध्वनि लगाना सुनने के कारण से होती है। शायद अर्धमागधी महावीर के समय में कथ्य भाषा के रूप में थी, इसलिए अर्धमागधी में सबसे ज्यादा इस श्रुति का प्रयोग होता है। य श्रुति का यही निष्कर्ष है।

संयुक्त वर्ण के नियम

१४. प्राकृत में दो विसदृश व्यंजन वर्ण कभी संयुक्त नहीं होते हैं। केवल अपने-अपने वर्णों के साथ सन्धि हो सकती है अर्थात् एक ही वर्ग के साथ एक ही वर्ग की सन्धि और स स, ल ल के साथ भी सन्धि हो सकती है।

संस्कृत में भिन्न वर्ग की संधि हो सकती है पर इस प्रकार से प्राकृत में सन्धि नहीं होती है। इस विषय में कुछ नियम इस प्रकार है :—

क) संयुक्त वर्ण का अथवा पहला वर्ण जब क-ग-ट-ड-त-द-प-श-ष-स होता है तो उनका लोप होता है। यथा :—

क) मुक्तम्-मुत्तं, सिक्तम्-सित्थं

ग—दुग्धम्-दुद्धं, मुग्धम्-मुद्धं

ट—षट्पदः-छप्पओ, कट्फलम्-कप्फलं

ड—खड्गः-खग्गो, षड्जः-सज्जो

त—उत्पलम्-उप्पलं, उत्पादः उप्पाओ

द—मद्गुः मग्गू, मुद्गरः मोग्गरो

प—सुप्तः-सुत्तो, गुप्तः-गुत्तो

श—श्लक्ष्णम्-लणहं निश्चलः-णिच्चलो

ष—गोष्ठी-गोट्ठी, षष्ठः-छट्ठो, निष्ठुरः-निट्ठुरो

स—स्खलितः-खलिओ, स्नेहः-नेहो।

ख) प्राकृत में संयुक्त वर्ण जब, ब, ल, व, र होता है तब उसका लोप हो जाता है। यथा—

ब—शब्दः सद्दो, अब्दः-अद्दो, लुब्धकः-लोद्धओ।

ल—उल्का-उक्का, वल्कलम्-वक्कलं, विक्लवः-विक्कओ।

व—पक्वम्-पिक्कं, ध्वस्तः धत्थो,

र—अर्कः-अक्को, वर्गः-वग्गो, रात्रिः-रत्ती।

ग) प्राकृत में संयुक्त वर्ण का द्वितीय वर्ण जब, म, न, य, होता है तब म, न, य का लोप हो जाता है। यथा—

म—युग्मम्-जुग्गं, रश्मिः-रस्सी, स्मरः-सरो।

न—नग्नः-नग्गो, लग्नः-लग्गो,

य—श्यामः सामा, कुड्यम्-कुड्डं

घ) प्राकृत में संयुक्त वर्ण का एक वर्ण लोप होने पर जो शेष है उसका द्वित्व होता है। परन्तु आदि में जब कोई लोप होगा तब उसका द्वित्व नहीं होता है। यथा—क्षमा-खमा, स्कन्धः-खन्धो।

ङ) प्राकृत में दो महाप्राण वर्ण का संयुक्त वर्ण नहीं होता है। उसमें प्रथम महाप्राण वर्ण अल्पप्राण होता है। यथा :—अक्षमः-*अखखमो-अकखमो, ऐसा सर्वत्र होता है।

[महाप्राण वर्ण—ख, ध, छ, झ, ठ, ढ, थ, घ, फ, भ]

च) प्राकृत में क्ष्म, श्म, ष्म, स्म, ह्म को म्ह होता है। यथा—

श्म—कुश्मानः-कुम्हाणो, कश्मीराः-कम्हारा ।

ष्म—ग्रीष्मः-गिम्हो, ऊष्मा-उम्हा

स्म—अस्मादृशः अम्हारिसो, विस्मयः-विम्हओ

ह्म—ब्रह्मा-बम्हा, सुह्मा—सुम्हा, ब्राह्मणः बम्हणो ।

छ) प्राकृत में श्न, ष्ण, स्न, ह्न, क्ष्ण, को ण्ह होता है ।

यथा—(श्न) प्रश्नः-पण्हो, (ष्ण) विष्णुः-विण्हू, (स्न) ज्योत्स्ना-जोण्हा (ह्न) वह्निः-वण्ही पूर्वाह्णः-पुव्वण्हो (क्ष्ण) तीक्ष्णं-तिण्हं

रूप-तत्व

विशेष्य :

विशेष्य का प्राकृत में सविभक्ति रूप होता है। जिसको हम शब्द रूप कहते हैं। विशेष्य का वचन, लिंग, कारक, विभक्ति और शब्द रूप होता है।

वचन

प्राकृत में केवल दो वचन है—एक वचन और बहुवचन। संस्कृत का द्विवचन प्राकृत में नहीं होता है। उसकी जगह पर बहुवचन होता है।

लिंग

संस्कृत के अनुसार प्राकृत में तीन लिंग होते हैं। यथा-पुलिंग स्त्रीलिंग नपुंसकलिंग। साधारणतया संस्कृत के अनुसार प्राकृत में भी लिंग होते हैं। किन्तु कुछ-कुछ ऐसे शब्द हैं जिसमें संस्कृत लिंग का अनुसरण प्राकृत में नहीं होता है। जैसे संस्कृत में तरणि शब्द स्त्रीलिंग होता है किन्तु प्राकृत में पुलिंग होता है। इस तरह प्रावृट् शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग है प्राकृत में पुलिंग है। इसका मार्गदर्शन तत्वत् स्थल पर दिखायेंगे।

कारक

संस्कृत के अनुसार प्राकृत में भी कारक है। विशेषता यही है कि सम्प्रदान के लिए केवल षष्ठी विभक्ति होती है। जिस कारण से संस्कृत में जो-जो कारक होता है उसी ढंग से प्राकृत में भी होता है। यद्यपि संस्कृत की नियमावली सर्वत्र नहीं चलती है तब भी हम तो उसे संस्कृत नियमावली (आप यदि जानेंगे तो उसी) से काम चला सकते हैं।

कारक विभक्ति

प्राकृत में चतुर्थी विभक्ति नहीं होती हैं। इसलिए प्राकृत में सात बिभक्तियां हैं। चतुर्थी के अर्थ में षष्ठी विभक्ति होगी। संस्कृत के अनुसार प्राकृत में विभक्ति नहीं हैं। प्राकृत में विभक्ति की उत्पत्ति संस्कृत से अलग होती है। प्राकृत में विभक्ति का स्वरूप निम्नलिखित हैं—

विभक्ति		एकवचन		बहुवचन
प्रथमा	सु	ओ	जस	विभक्ति का लोप, आ
द्वितीया	अम्	अनुस्वार (.)	पास	" " , ए
तृतीया	टा	ण, णं (णा)	मिस्	हि, हिं, हिँ
चतुर्थी	ङे	— —	म्यस्	— —
पंचमी	ङि	त्तो,ओ,उ,हि,हिंतो	"	त्तो,ओ,उ,हि,हितो,सुतों
षष्ठी	ङस्	स्स	आम्	ण, णं
सप्तमी	ङि	ए, म्मि	सुप्	सु, सुं
सम्बोधन	सु	लोप,याप्रथमाकीतरह	जस्	प्रथमा की तरह

शब्द रूप

प्राकृत में दो तरह के शब्द होते है :—

एक है स्वरान्त और दूसरा है व्यन्जनान्त । स्वरान्त शब्द केवल अ, आ,इ, ई, उ, ऊ हो सकता है क्योंकि एकारान्त तथा ओकारान्त शब्द प्राकृत में नहीं आते हैं । इसलिये केवल अकारान्त, आकारान्त, इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त तथा ऊकारान्त शब्द ही प्राकृत में मिलते हैं ।

प्राकृत में ऋ, ॠ और ऌ नहीं हैं इसलिए ऋकारान्त शब्द प्राकृत में अर, आर और कभी-कभी उकार भी होते हैं ।

शब्द पुलिंग, स्त्रीलिंग एवं नपुंसकलिंग होता है लेकिन विभक्ति प्रयोग में उन लिंगों की भिन्नता नहीं पायी जाती है । केवल नपुंसकलिंग की प्रथमा एवं द्वितीया विभक्ति में अलग विभक्तियाँ लगती हैं । नीचे शब्द के शब्द रूप दे रहा हूं ।

अकारान्त पुलिंग शब्द का रूप

वच्छ

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वच्छो	वच्छे
द्वितीया	वच्छं	वच्छे वच्छा
तृतीया	वच्छेण-वच्छेणं	वच्छेहि, वच्छेहिं, वच्छेहँ

चतुर्थी	—	—
पंचमी	वच्छा, वच्छत्तो, वच्छाओ वच्छाउ, वच्छाहिं, वच्छाहिंतो	वच्छत्तो, वच्छाओ, वच्छाउ वच्छेहि, वच्छाहिंतो, वच्छेहिंतो वच्छासुंतो, वच्छेसुंतो
षष्ठी	वच्छस्स	वच्छाण-णं
सप्तमी	वच्छे, वच्छम्मि	वच्छेसु, वच्छेसुं
सम्बोधन	वच्छ, वच्छा, वच्छो	वच्छा

इकारान्त पुलिंग शब्द का रूप
गिरि

विभक्ति	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गिरी	गिरी, गिरओ, गिरउ, गिरिणो
द्वितीया	गिरिँ	गिरी, गिरिणो
तृतीया	गिरिणा	गिरीहि-हिं-हिँ
चतुर्थी	—	—
पंचमी	गिरिणो, गिरित्तो, गिरीओ, गिरीउ, गिरीहिंतो	गिरित्तो, गिरीओ, गिरीउ गिरीहिंतो-सुंतो
षष्ठी	गिरिणो, गिरिस्स	गिरीण-णं
सप्तमी	गिरिम्मि	गिरीसु-सुं
सम्बोधन	गिरि, गिरी	गिरिणो, गिरओ, गिरउ, गिरी

[क्रमशः

श्रावक जीवन (१३)

आचार्य श्री विजयभद्रगुप्त सूरीश्वरजी महाराज

पूर्वानुवृत्ति

अन्तर्राष्ट्रीय तस्करी करने वाले लोग प्रायः परराष्ट्रों में बिना इजाजत आते-जाते रहते हैं। अणुव्रतधारी को ऐसी प्रवृत्ति नहीं करनी चाहिये। ऐसे धंधे नहीं करने चाहिये।

५. लेन-देन में कम-ज्यादा नहीं करना चाहिये :

वैसे लेन-देन में भी चोरी नहीं करनी चाहिये। ज्यादा लेना और कम देना—एक प्रकार की चोरी है।

पुराने समय की एक बोधप्रद कहानी है। एक गांव था। गांव में एक धनवान सेठ रहते थे। दुकान थी, व्यापार चलता था। एक ग्वालिन सेठ के यहां दूध दिया करती थी। एक दिन सेठ की दुकान से ग्वालिन ने एक सेर चावल लिये। सेठ ने दो छटांक चावल कम दिये। ग्वालिन जाने लगी तो सेठानी ने ग्वालिन को एक सेर घी लाने को बोल दिया। ग्वालिन घर पर गयी। उससे एक तराजू में सेर चावल, जो वह लायी थी, रख दिये और सामने के तराजू में घी रख दिया। चावल से घी तोल दिया। जाकर सेठानी को दे दिया। सेठानी ने सेठ को बोला : 'मैंने एक सेर घी मंगवाया है। सेठ ने घी तोला। घी दो छटांक कम था! ग्वालिन वहां ही खड़ी थी। सेठ ने कहा : 'क्यों री, घी दो छटांक कम क्यों है ?'

ग्वालिन ने कहा : सेठ साब, आपने मुझे जितने चावल दिये, मैंने उतना आपको घी दिया है। आपके चावल से ही मैंने घी को तोला है।

सेठ अपनी चोरी समझ गये।

जिस समय वस्तु से वस्तु का लेनदेन होता था, उस समय इस प्रकार की चोरी प्रायः होती थी। मनुष्य का मन ही वैसा है। ज्यादा लेने में व कम देने में वह खुश होता है! अणुव्रतधारी को इसी वजह से सावधान किया जाता है।

इसी प्रकार, मूल्य पूरा लेकर माल कम देना भी चोरी है। कुछ उदाहरण से यह बात समझाता हूं।

१. पचास रुपये मीटर का कपड़ा है। रुपये पचास ले लेते हो और कपड़ा कम देते हो।

२. पांच रुपये किलो शक्कर है, आप पांच रुपये ले लेते हो, और शक्कर किलो से कम देते हो।

३. पचास रुपया किलो घी का भाव है। पचास रुपये ले लेते हो, घी किलो से कम देते हो।

यह सब चोरी है। प्रायः कपटकुशल व्यापारी ही ऐसी चोरी करता है। और प्रायः अनपढ़ लोग ही फंसते हैं। जिस गांव में अज्ञानी, आदिवासी....भील लोग बसते हैं और जहां एक-दो ही व्यापारी होते हैं, वहां इस प्रकार की चोरी होती है।

५. व्यापार में धोखेबाजी नहीं करें :

और, जो व्यापारी न्याय नीति और प्रामाणिकता के पक्षपाती नहीं होते हैं, वे व्यापार में धोखेबाजी करते हैं मिलावट करते हैं। शक्कर की जगह कंकर के बोरे भरकर रवाना करते हैं! खाद्य पदार्थों में कैसी-कैसी मिलावट होती है, क्या आप नहीं जानते? घी की जगह 'मटनटेलो' का उपयोग कितना व्यापक बना है? शुद्ध घो कितना दुर्लभ बना है?

कपड़े में भी बेईमानी होती है न? कपड़ा हो सूरत का, ऊपर सिक्का लगाते हैं जापान का! होता है न ऐसा? स्वदेशी माल के ऊपर विदेशी सिक्का लगाकर माल बेचते हैं न? क्यों ऐसा करते हैं? श्रीमंत बनने के लिये न? क्या बेईमानी करने से, धोखाधड़ी करने से मनुष्य धनवान बनता है?

प्रश्न : जी हां, ऐसा देखने में आता है!

महाराजश्री : देखने में दोष है। धनप्राप्ति होती है 'लाभातराय कर्म' के क्षयोपशम से। अनीति, अन्यायं और बेईमामी करने से लाभांतरायकर्म बंधता है! एक मनुष्य का लाभांतरायकर्म का क्षयोपशम हो और वह बेईमानी करता है, तो उसे अर्थलाभ जरूर होता है, परन्तु वह ऐसा पापकर्म बांधता है कि भविष्य में लाख उपाय करने पर भी अर्थलाभ नहीं होगा।

यदि अनीति-अन्याय और बेईमानी करने से धनप्राति होती हो तो दुनिया में धनवान लोग ही ज्यादा होते। चूंकि अनीति, अन्याय और बेईमानी करने वाले लोग ही दुनिया में ज्यादा हैं!

दुनिया में गरीब ज्यादा हैं, धनवान कम हैं। चूंकि दुविया में न्याय नीति का पालन करने वाले, ईमानदार लोग कम हैं। जब दुनिया में न्याय-नीति का पालन करने वाले लोग बढ़ेंगे, ईमानदार लोग बढ़ेंगे, तब दुनिया में धनवान

भी बढ़ेंगे । चोरी नहीं करने का उपदेश देनेवालों की यह ज्ञानदृष्टि थी। वे कार्यकारणभाव के ज्ञाता महापुरुष थे । 'चोरी करने से 'लाभान्तराय' नाम का पाप कर्म बँधता है और जब वह कर्म उदय में आता है तब जीवात्मा निर्धन बनता है । सुख के साधनों की प्राप्ति, प्रयत्न करने पर भी नहीं होती है ।' यह है कार्यकारणभाव !

चोरी करने के विचार भी मत करो :

इसलिये कहता हूं कि चोरी करने के विचार भी मत किया करो । किसी मनुष्य को चोरी करके लाखों रुपये कमाते हुए देखकर आप अपने मन में चोरी कर लाखों रुपये कमाने के विचार नहीं करें, परन्तु सोचें कि—'इस मनुष्य ने पूर्वजन्म में न्यायनीति और प्रामाणिकता का पालन किया होगा, साधुपुरुषों को दान दिया होगा, दीन-दुःखी की सेवा की होगी, इसलिये यहां इस जन्म में उसको लाखों रुपये मिले हैं । परन्तु इस जन्म में वह अन्याय-अनीति और बेईमानी कर रहा है, इसलिये वह आने वाले जन्म में निर्धन बनेगा । गरीब के घर में जन्म पायेगा और आजीवन गरीब बना रहेगा ।' इस सिद्धांत को अच्छी तरह समझ लें और मन में भी चोरी के विचार नहीं करें । मन में चोरी के विचार करने से, चोरी करने की योजना बनाने से पाप कर्मों का बन्धन होता है । क्यों निरर्थक पापकर्म बांधना ?

चोरी करने के प्रयोजन

प्रश्न : चोरी करने के विचार ही क्यों आते हैं ?

महाराजश्री : चोरी करने के अनेक प्रयोजन होते हैं । पहला प्रयोजन होता है आजीविका का अभाव । बहुत प्रयत्न करने पर भी परिवार की अनिवार्य आवश्यकतायें पूर्ण नहीं होती है, परिवार के लोगों को पर्याप्त भोजन नहीं मिलता हो, पर्याप्त वस्त्र नहीं मिलते हों रहने को घर नहीं मिलता हो । प्रामाणिकता से व्यवसाय करने पर भी पैसे नहीं मिलते हैं तब चोरी करने का विचार मनुष्य प्रायः करता है ।

दूसरा प्रयोजन होता है श्रीमंत बनने की इच्छा ! जो मनुष्य श्रीमंतों को सुखी मानता है, वह श्रीमंत बनने की इच्छा करता है । प्रामाणिक व्यवसाय करने पर श्रीमंत नहीं बना जाता है तब वह चोरी करने को तैयार होता है ।

तीसरा कारण होता है चोरों के साथ दोस्ती ! दोस्त चोर होते हैं तो मनुष्य निष्प्रयोजन चोरी करने लगता है । कुछ चोरियों में धनवान लड़के भी पकड़े जाते हैं !

चौथा प्रयोजन होता है वैसी फिल्में देखना । फिल्म देखकर चोरी करने की, डाका डालने की···लूट करने की प्रेरणा पानेवालों के अनेक किस्से बनते हैं

अंग्रेजों के शासनकाल में बम्बई की लॉर्ड्स बैंक लूटने वाले २०-२१ साल के लड़के ने कबूल किया था कि एक सिनेमा देखकर मैंने बैंक लूटने की योजना बनायी थी। इसलिये आप लोगों को बार-बार कहता हूँ कि फिल्में मत देखो। अच्छी संस्कारप्रेरक फिल्में बहुत कम बनती हैं। चूंकि अच्छी फिल्मों का व्यापार अच्छा नहीं चलता है न ! फिल्म बनाने वाले पैसे कमाने के लिये ही फिल्म बनाते हैं। चाहे प्रजा का कुछ भी हो !

चोरी का मूल कारण धन प्राप्ति !

चोरी के अनेक कारण बताये, परन्तु मूल कारण होता है धनप्राप्ति का। धन का चोरी लोभ करवाता है। धन का लोभ नहीं होता हैं तो मनुष्य अपने व्यापार में भी प्रामाणिक रह सकता है। धोखाधड़ी नहीं करेगा।

बंगाल की एक घटना है। कृष्णपांती चौधरी अच्छे व्यापारी थे। वे नमक के बड़े व्यापारी थे। लाखों रुपये कमाये थे नमक के व्यापार में। एक दिन एक व्यापारी उनकी पेढ़ी पर आया। उसने कृष्णपांती चौधरी के साथ कितने हजार मन नमक का सौदा किया। थोड़े रुपये भी दे दिये और कहा कुछ दिनों के बाद मैं माल ले जाऊँगा।'

व्यापारी चला गया। कुछ दिन बीत गये, महीने बीत गये, परन्तु वह व्यापारी माल लेने वापस नहीं आया। इधर नमक के भाव बढ़ते चले ! जिन व्यापारियों के पास नमक का स्टाक था, उन्होंने बहुत पैसे कमाये। कृष्णपांती चौधरी ने भी नमक बेचकर अच्छा मुनाफा कमाया। परन्तु वह नमक नहीं बेचा, जो उस व्यापारी को बेचा था।

जब एक वर्ष बीत गया, नमक का भाव भी अच्छा बढ़ा था, तब उस व्यापारी का नमक बेचकर जो रुपये आये, उसके नाम जमा कर दिये।

एक दिन वह व्यापारी आया। कृष्णपांती चौधरी ने मुनाफे की सब राशि उसको दे दी। वह व्यापारी तो चौधरी की प्रामाणिकता देखकर दंग रह गया। बहुत प्रशंसा कर वह चला गया।

अब आप लोग सोचें।

प्रश्न : हम होते तो उस व्यापारी को एक पैसा भी नहीं देते।

महाराजश्री : क्यों ? पैसे का लोभ बढ़ गया है। लोभी मनुष्य कौन सा पाप नहीं करता है ? चोरी करने का अवसर मिलना चाहिये, लोभी चोरी करेगा ही ! लोभी बेईमानी करेगा ही। लोभी अन्याय-अनीति करेगा ही। लोभी धोखेबाजी भी करेगा।

इसलिये अणुव्रतधारी को निर्लोभी-संतोषी बनने का उपदेश दिया गया है। लोभी व्यक्ति प्रायः अणुव्रतों का पालन नहीं कर सकता है।

चोरी से बचने के लिये कुछ सावधानियां

तीसरे अणुव्रत का सही पालन करने के लिये जिस प्रकार निर्लोभी बनना है। वैसे दूसरी भी कुछ सावधानियां रखने की हैं। पहली सावधानी है किसी की भी वस्तु बिना पूछे नहीं लेना।

बिना पूछे दूसरों की वस्तु लेने से कभी मन धोखा दे सकता है पहले चोरी करने का इरादा नहीं हो, परन्तु बाद में चोरी की वृत्ति पैदा हो सकती है।

अथवा, बिना पूछे दूसरों की वस्तु लेने से चोरी का आरोप आ सकता है। इसलिये जिसको वस्तु लेना है, उसके मालिक को पूछ कर ही लिया करो।

दूसरी सावधानी है चोरों के साथ दोस्ती नहीं रखना। भले ही चोर उदार हो, परोपकारी हो···कुछ भी हो, उसके साथ दोस्ती नहीं रखनी चाहिये। चोर की बातें सुनते-सुनते कभी मन को चोरी अच्छी लगेगी और अवसर मिलने पर चोरी भी कर लोगे।

तीसरी सावधानी है किसी की जमीन पर गिरी हुई वस्तु लेना नहीं। यह आदत अच्छी नहीं है। इस आदत से कभी मनुष्य दुःखी होता है। बम्बई की एक घटना है।

एक भाई जौहरी बाजार से गुजर रहा था। इसके आगे दो युवक जा रहे थे। उन्होंने जान-बूझ कर जमीन पर सोने की अंगूठी गिरा दी! पीछे चल रहे उस भाई ने अंगूठी ज्यों ही उठायी, उन दो युवकों ने उसको गले से दबोच लिया। मारपीट शुरू कर कर दी! उसके हाथ में से बेग छीन लिया और वे दोनों युवक भीड़ में अदृश्य हो गये!

चोरी के नुकसान

ऐसे तो अनेक नुकसान होते हैं। इसलिये ज्ञानी पुरुष कहते हैं कि चोरी नहीं करनी चाहिये।

१. छोटी-बड़ी चोरी करनेवाला अविश्वसनीय बनता है। कोई उसके ऊपर विश्वास नहीं करता है। चोरी करना छोड़ भी दिया हो, फिर भी वह विश्वसनीय नहीं बनता है।

एक गांव में हम लोग गये। गांव में चार-पाच प्रतिष्ठित व्यक्ति मेरे पास बैठे थे। एक लड़का वहां खड़ा था। थोड़ी देर तक हमारी बातें होती रही। जाते समय उन चार पांच व्यक्ति में से एक भाई ने मेरे कान में कहा: इस लड़के से संभालना, वस्तु उठाकर ले जाने की आदत है उसकी!' बाद में जब उस लड़के को मैं देखता, तब 'यह चोर है!' ऐसा विचार आ जाता था! हालांकि लड़के की आदत सुधर गयी थी, परन्तु पहले अनेक बार चोरियां करने से वह अविश्वसनीय बन गया था।

२. चोरी करने वाला मनुष्य सदैव भयभीत रहता है। भय उसको सताता रहता है। भयभीत मनुष्य को शांति नहीं होती है। सुख के अनेक साधन होते हुए भी वह सुखानुभवों से वंचित रहता है।

३. चोर का पारिवारिक जीवन दुखमय होता है। परिवार अच्छा होने पर भी असन्तोष उसको सताता रहता है। परिवार के साथ चोर का ज्यादा सम्बन्ध भी नहीं रहता है। ज्यादा समय परिवार से दूर रहना पड़ता है चोर को।

४. सज्जनों से चोर का सम्बन्ध कट जाता है। व्यसनी और दुर्जन लोगों से उसका सम्बन्ध होता है। इसलिए अनेक दुर्गुण उसमें आ जाते हैं।

५. पापकर्म का बन्धन होता है। निकाचित कर्मबंधन भी होता है। चोरी के साथ यदि हिंसाचार करता है तो प्रायः नर्क में जाने के कर्म बांध लेता है।

६. जिन हाथों से मनुष्य चोरी करता है, जिन अंगोपांगों को चोरी के काम में लाता है, आने वाले जन्मों में वे अंगोपांग उसको नहीं मिलते हैं।

अनेक दु:खों से बचना है तो चोरी का पाप कभी मत करो। भले दुःख में जीना पड़े, गरीबी में जिंदगी बितानी पड़े, परन्तु चोरी कभी नहीं करना। अणुव्रत का पालन कर जीवन सफल करो, यही मंगल कामना है। ●

राजा-सम्प्रति

पूर्वानुवृत्ति

देशाभिमान के रक्त से रंगा हुआ एक भी नर-बच्चा विद्यमान् रहने तक बराबर युद्ध में लड़ते रहने का कलिग वासियों का निश्चय था। अशोक की तलवार ने कई पुरुषों की बलि ले ली, और कई को स्वतन्त्रता की वेदी पर सदैव के लिये शान्त निद्रा में सुला दिया था, किन्तु फिर भी अगले दिन नये कलिगवासी अपनी स्वाधीनता के लिए अशोक की तलवार के वार झेलने को बाहर निकल पड़ते थे।

कलिङ्ग-वासियों के साथ युद्ध करते हुए तीन-तीम वर्षों की लम्बी अवधि व्यतीत हो गई; फिर भी अशोक की तलवार के सम्मुख कलिगवासी नरवीरों का धैर्य अडिग ही रहा। कलिगदेश के प्रत्येक देशाभिमानी रत्न सदैव के लिए माता की गोद में सो गये थे; क्योंकि पराधीनता की अपेक्षा मर जाना उनके लिए विशेष प्रिय होने से रण-संग्राम में आकर शत्रु के सैनिकों को मारते हुए स्वयं मर जाने में वे विशेष गौरव अनुभव करते थे; किन्तु तीन वर्ष के अन्त में जब कोई भी वीर पुरुष शेष न रहा; तब उस प्रदेश की वीर जनता का धैर्य समाप्त हो चला। अन्त में केसरिया वस्त्र धारण करके अपना सामूहिक बल प्रदर्शित करने के लिए वहाँ की प्रजा ने निश्चय किया और इसी निश्चय के अनुसार एक दिन वह वीर जनता अशोक की तलवार को चुनौती देती हुई उस पर टूट पड़ी। दोनों के बीच तुमुल युद्ध हुआ, किन्तु अशोक की विशाल सेना के सम्मुख वह मुट्ठी भर प्रजा किस गिनती में थी? अन्ततः अपनी वीरता का परिचय देकर कलिगदेश के अगणित वीर योद्धा सदैव के लिये मीठी निद्रा में सो गये, और इस प्रकार युद्ध का अन्त हुआ।

विजयी अशोक ने सेना सहित कलिग की राजधानी में प्रवेश किया, किन्तु वहां उसने क्या देखा? नगर की सड़कों पर लाखों मुर्दे पड़े हुए थे। लाखों मनुष्य बिना अन्न-जल के तड़पकर मर गये थे और लगभग एक लाख तो उसने युद्धभूमि में ही मार गिराये थे। साथ ही डेढ़ लाख कलिगवासी उसकी छावनी में बन्दी बनाकर रखे गये थे। देश भर के प्रत्येक घर में घोर हाहाकार मचा

हुआ था। अतएव नर-हत्याकाण्ड के उस कोलाहल ने अशोक के बज्र समान हृदय को भी हिला दिया। उसने देखा कि सम्पूर्ण कलिंगदेश भीषण रुदन एवं चीत्कार से गूँज रहा है। किसी का भाई तो किसी का पुत्र और किसी का अन्य स्वजन युद्धाग्नि में भस्म हो चुका था। उस गर्म राख पर युद्ध समाप्त होने के पश्चात् घर-घर ऊष्ण अश्रुधारा बहाते हुए अशोक ने अपनी आँखों से देखा। उसको ग्लानि अनुभव हुई कि :—"अरे! मैंने किस सुख के लिए कलिंगदेश की स्वाधीनता को नष्ट कर दिया! लाखों कलिंग-वासियों का जीवन नष्ट करने का अपराधी मैं ही हूँ। इस हिंसामयी राज्यलक्ष्मी को धिक्कार है और ऐसे पराक्रम को भी बारम्बार धिक्कार है। जिसने कि आत्मा को अज्ञान के मार्ग में खींचकर अनेक प्रकार के पाप कर्म कराते हुए नर्कगामी होने का मार्ग खोल दिया है। इतना भीषण हत्याकाण्ड करके मुझे न जाने किस दुर्गति में जाना था? अजातशत्रु ने तो तीनों खण्ड का राज्य प्राप्त कर आधे भारतवर्ष के राजाओं को अधीन बना लिया था; किन्तु फिर भी यह पृथ्वी उनकी नहीं हुई! ग्रीक सरदार सिकन्दर ने संसार पर विजय प्राप्त करके महान् साम्राज्य स्थापित किया, किन्तु यह पृथ्वी उसके साथ भी नहीं गई। तब भला, मेरे साथ भी यह क्या जानेवाली है? सचमुच ही मैंने कलिंग की शोभा नष्ट कर कोई अच्छा काम नहीं किया है।" इस प्रकार उसे घोर पश्चाताप हुआ और इस अन्तिम विजय यात्रा के पश्चात् उसने सदैव के लिए अपनी तलवार को म्यान में रखते हुए युद्ध को नमस्कार कर लिया और शिकार के साथ ही मांस भी छोड़ दिया। साथ ही इस बात के लिये भी प्रतिज्ञा की कि,—अबसे मैं यदि बाहर भी निकलूँगा तो केवल जनता के सुख-समाधान के लिये ही! इसके बाद कलिंग राज्य की भली-भाँति व्यवस्था करके अपनी ओर से वहाँ एक अधिकारी नियुक्त कर वह अपनी सेना सहित पाटली पुत्र लौट गया। वहाँ जाकर अनिच्छा पूर्वक उसने अपनी विजय का महोत्सव भी मनाया।

उसके समय में पाटलीपुत्र की वैभव सम्पन्नता अपूर्व थी। उस नगर का विस्तार नौ मील का था और उसमें चौंसठ द्वार बने हुए थे। इसी प्रकार ५७० बुर्जवाले कोट—चार दिवारी से यह सम्पूर्ण नगर सुरक्षित था। उसके आसपास चारों ओर ६०० फीट चौड़ी और बहुत गहरी खाई भी बनी हुई थी। चन्द्रगुप्त के समय कोटकी दीवाल लकड़ी की बनी हुई थी, और अनेक भवन भी लकड़ी से ही निर्मित थे, किन्तु सम्राट अशोक ने उस दीवार को तुड़वाकर पत्थर की बनवा दी। साथ ही उसके समय में अनेक स्तूप एवं बिहार—मठ भी निर्माण हुए। इस प्रकार चन्द्रगुप्त की अपेक्षा अशोक महान् प्रतापी सम्राट सिद्ध हुआ।

भद्रबाहुस्वामी वीर संवत् १७० में स्थूलिभद्र को पटधर स्थापित कर स्वर्गलोक में गये। उन स्थूलिभद्र का जन्म वीर संवत् ११६ में हुआ था। युवावस्था में बारह वर्ष पर्यन्त वेश्या के घर रहकर संवत् १४६ में उन्होंने संभूतिसूरि से व्रत ग्रहण किया और संवत् १७० में पटधर हुए।

स्थूलिभद्र अन्तिम चौदहपूर्वी श्रीमहावीर से सातवें पाट पर हुए थे। इनके दो शिष्य आर्यमहागिरि और आर्य सुहस्ति नाम के थे, जिन्हें इन्होंने दीक्षा दी और उनके बाद ही ये पट्टधर हुए हैं। वीरसंवत् १७० में आर्य महागिरि को दीक्षा दी गई और संवत् २२२ में आर्य सुहस्तिस्वामी को दीक्षा देकर स्थूलिभद्र स्वामी स्वर्गवासी हुए। संवत् २१९ में आर्य महागिरि पटधर एवं युग प्रधान हुए। इसके बाद संवत् २४६ में आर्यसुहस्ति सूरीपद पर प्रतिष्ठित हुए।

महान् अशोक के समय में आर्यसुहस्ति एवं आर्य महागिरि गच्छनायक थे। इनमें भी आर्यसुहस्तिस्वामी तो महावीर स्वामी की तीसरी शताब्दि के अन्त तक विद्यमान थे।

उस समय तेईस उदयों में से प्रथम उदय चल रहा था। प्रथम उदय में बीस युग प्रधान हुए हैं। उनमें सुधर्मास्वामी और जम्बू स्वामी ही मोक्ष को प्राप्त हुए। इन दोनों की एक ही पाट पर अर्थात् महावीर स्वामी के आठवें पट पर गणना की गई है।

बारहवाँ परिच्छेद

भवितव्यता

स्त्रियों का हृदय और पुरुषों का भवितव्य जानने का सामर्थ्य संसार में किसमें हो सकता है ? मनुष्य प्राणी संसार में सुख की आशा से संसार-रूपी जीवन यात्रा में आगे बढ़ता ही चला जाता है। सर्दी-गर्मी, भूख-प्यास एवं दु:खादिक अनेक प्रकार के परिषह सहने पर भी उसे आवश्यकता से प्राय: कम ही फल प्राप्त होता है, अथवा कभी-कभी उलटा ही परिणाम होता है। साथ ही किसी को अल्प प्रयास से ही विशेष लाभ हो जाता है। उल्टे पासे भी उसका भाग्य सीधा कर देते हैं, क्योंकि मनुष्य की प्रकृति विभिन्न प्रकार की होती है। और उनके कर्मों की रचना भी भिन्न रूप की ही होती है। इसीलिए भविष्य के पर्दे की आड़ में छिपकर चुनौती देनेवाली कर्म रचनाएँ कब क्या करेंगी, यह तो केवली भगवान ही जान सकते हैं।

अवन्ती में आज उत्सव का दिवस होने से सर्वत्र आनन्द ही आनन्द का वातावरण छा रहा था। अनेक छोटे-बड़े नागरिक अपने-अपने वैभव के अनुसार वस्त्राभूषण धारण कर आनन्दोत्सव में निमग्न दिखाई दे रहे थे। आज युवराज

कुणाल का जन्मदिवस-जयन्ती होने के कारण राजपरिवार से लेकर सामान्य प्रजाजन तक प्रत्येक वर्ग ने इस समारोह में अपनी प्रसन्नता व्यक्त की थी। अधिकांश जनता धनाढ्य होने के साथ-साथ ही शान्ति का साम्राज्य होने के कारण व्यापार-व्यवसाय की दृष्टि से भी अवन्ति आज उन्नति के शिखर पर आसीन थी।

मध्याह्न के पश्चात् आज राज दरबार में सभी प्रमुख नागरिक आमन्त्रित किये गये थे। युवराज सुन्दर वस्त्रभूषणों से सुसज्जित होकर राज-कर्मचारियों एवं धनाढ्य नागरिकों का अभिवादन स्वीकार करने के लिए सिंहासन पर विराजमान थे। उस बाल युवराज के निकट अवन्ती के अधिकारी तथा उनके पीछे मन्त्रीगण बैठे हुए थे। राज्य के छोटे-बड़े अधिकारी युवराज के सम्मुख भेंट की जानेवाली विविध वस्तुएँ रखकर अपना आसन ग्रहण कर रहे थे। नगर सेठ एवं अन्य धनी-मानी सज्जन भी विविध प्रकार की भेंट-सामग्री अर्पण कर उसके प्रति अपना सम्मान प्रकट कर रहे थे।

राज्य की ओर से ही आज आनन्द का दिवस होने के कारण नगर में अनेक स्थानों पर नाच-तमाशों की योजना की गई थी। कहीं संगीत के मधुर गान के स्वर गूंज रहे थे, तो कहीं विदूषक लोग अनेक प्रकार के हास्य-विनोद द्वारा दर्शकों का मनोरंजन कर रहे थे। इस प्रकार समृद्धि में बढ़ी-चढ़ी अवन्ती आज आनन्द में मस्त बनकर स्वर्गीय शोभा से स्पर्धा कर रही थी।

दक्षिणा के लोभी ब्राह्मणों को राज्य की ओर से अनेक प्रकार के दानादि दिये गये थे। गरीब, लूले-लंगड़े, अपंग, अन्धे एवं अन्य सब प्रकार से निराश्रित जनों को मन चाहा भोजन कराकर सन्तुष्ट किया गया था। इस प्रकार युवराज के कल्याण के निमित्त भली-भाँति यशदान कीर्तिदान और उचित दानादि किये गये थे। अहिंसा-प्रधान शासन होने से सर्वत्र ढोल-नगाड़े द्वारा अहिंसा की दुहाई प्रवर्तित कर समस्त जीवों को अभयदान दिया गया था। साथ ही विवेकीजन सुपात्र की भक्ति करना भी नहीं भूले थे। इसीलिए सर्वत्र ही राजा से लेकर रंक तक सब आनन्द में निमग्न हो रहे थे।

युवराज कुणाल के प्रति सम्राट का असाधारण प्रेम ही प्रजा के लिए इस उत्सव का कारण बन गया था। बाल्यावस्था में ही युवराज पद पाकर वह साम्राज्य का उत्तराधिकारी सिद्ध हो चुका था। अतएव जो कुमार भविष्य में अपना स्वामी-सिरताज बनने वाला था, उसके प्रति प्रजाजन एवं उनके नायक या नेता यदि अपना सम्मान भाव प्रकट करें, तो यह स्वाभाविक ही था। उस हर्ष एवं उत्साहपूर्ण समारोह में कुमार युवराज का हृदय भी आनन्द के कारण प्रसन्न हो रहा था।

जब राजसभा नागरिकों से पूर्ण हो गई ; तो अवन्ती के अधिकारियों ने युवराज कुणाल को मधुर शब्दों में प्रमुख प्रजाजन से परिचय कराया। सम्राट् अशोक वर्धन की राजनीति की सराहना की गई और भावी सम्राट् के विषय में भी दो शब्द कहे गये। इसके पश्चात् राजसभा में संगीत का आयोजन किया गया। मालवदेश की सर्वोच्च गणिकाओं ने अपनी नृत्यकला एवं संगीत कुशलता के द्वारा समस्त सभाजनों का यथेष्ट मनोरंजन किया। इसी प्रकार सभा में पानी की तरह इत्र के फुहारे से छूट रहे थे। उन वारांगनाओं के हाव-भाव एवं संगीत के नाद और गान-तान में राजसभा निमग्न हो रही थी। दुःख क्लेश या विपत्ति क्या वस्तु है ; इसकी झलक भी उस समय कहीं दिखाई नहीं देती थी।

इतने ही में अचानक प्रतिहारी ने आकर युवराज एवं अवन्ति पति को नमन करते हुए निवेदन किया कि "स्वामिन्! पाटलीपुत्र से हमारा दूत लौट आया है और सम्राट् की ओर से कोई शुभ समाचार लाया है।"

द्वारपाल के इन शब्दों को सुनते ही युवराज तथा सामन्त सहसा प्रसन्न होकर बोले :—"अहो, मङ्गल में भी मङ्गल हो रहा है। अवश्य ही सम्राट् ने युवराज के लिए कोई शुभ समाचार भेजा होगा। उससे आज के आनन्द में निश्चित ही वृद्धि होगी।" सामन्त माधवसिंह ने अवन्ती के अधिकारी से कहा कि वह दूत को राजसभा में उपस्थित होने की आज्ञा दे। प्रतिहारी प्रणाम करके चला गया। थोड़ी ही देर में दूत मन्दगति से चलता हुआ युवराज के सिंहासन के निकट आ खड़ा हुआ और प्रणाम करते हुए उसने सम्राट् अशोक का सील-मुहर किया हुआ पत्र युवराज के हाथ में दिया। पिता की ओर से अपने लिए आया हुआ वह शुभ सन्देश युवराज ने मस्तक पर चढ़ाकर माधव सिंह को दिया और उन्होंने धड़कते हृदय से उसे खोलकर भीतर से महाराज अशोक के हाथ का लिखा हुआ पत्र निकाला और मन्त्रीश्वर के हाथ में देते हुए उसे पढ़ने को कहा।

आनन्द में मस्त बनी हुई प्रजा उस समय शान्त थी। नृत्य एवं सङ्गीत की कला प्रदर्शित करके थकी हुई वाराङ्गनाएँ भी उस समय क्षण भर विश्राम ले रही थीं। उत्सुक हृदय से समस्त सभाजन उस पत्र में लिखे शुभ समाचार को जानने के लिए आतुर हो रहे थे। "अहा! सम्राट् का प्राणाधिक पुत्र! जिसे स्वयं सम्राट् ने अपने हाथों से पत्र लिखा है! उसमें भला कौन सा शुभ समाचार होगा?"

हजारों उत्सुक हृदयों की जिज्ञासा बढ़ाते हुए मन्त्री ने वह पत्र मन-ही-मन पढ़ लिया और उनकी मुखाकृति एकदम मलीन हो गई! चतुर माधवसिंह एवं

(क्रमशः

पुस्तक समीक्षा

प्रज्ञा पुरुष : (कन्हैयालाल सेठिया, अभिनन्दन ग्रन्थ)

सम्पादक : झूमरमल सेठिया / डा० भानीराम वर्मा
महावीर इन्टरनेशनल (कलकत्ता केन्द्र)
२०, इकबालपुर लेन, कलकत्ता-२३

कलकत्ते के लब्ध प्रतिष्ठित साहित्यकार मर्मज्ञ कवि, मनीषी श्री कन्हैया लाल सेठिया के प्रति सर्मपित अभिनन्दन ग्रन्थ 'प्रज्ञा पुरुष' उनके बहुमुखी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व का आंकलन है। ५ अनुखण्डों में विभाजित यह ग्रन्थ उनके जीवन के विविध संस्मरणों की झाँकी प्रस्तुत करते हैं। सेठियाजी की छोटी-छोटी क्षणिकाओं में जीवन के यथार्थ की सच्चाई अनुभव के ताप से तप कर उपस्थित हुई है। डा० भानीरामजी वर्मा तथा श्री झूमरमलजी के सुयोग्य सम्पादन में सम्पादित यह ग्रन्थ सेठियाजी के बहुआयामी व्यक्तित्व व कृतित्व की सम्पूर्णता के बहुरंगी आपेक्षों को उद्घाटित करता है। हिन्दी साहित्य में सन् १९३० ई० के आसपास से प्रारम्भ अभिनन्दन ग्रन्थों की शृंखला में जुड़ी यह एक और महत्वपूर्ण कड़ी है। संयोजक एवं सम्पादकों का यह एक स्तुत्य प्रयास है।

—:o:—

जैन भवन प्रकाशन

हिन्दी

१. अतिमुक्त (२य संस्करण)—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी ४०.००

२. श्रमण संस्कृति की कविता—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी २०.००

३. नीलांजना—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी ३०.००

४. चन्दन मूर्ति—श्री गणेश ललवानी
अनु : श्रीमती राजकुमारी बेगानी ५०.००

५. वर्द्धमान महावीर—श्री गणेश ललवानी ६०.००

६. पंचदशी—श्री गणेश ललवानी १००.००

७. यादों के आईने में—श्रीमती राजकुमारी बेगानी ३०.००

८. बरसात की एक रात—श्री गणेश ललवानी ४५.००

বাংলা

১. অতিমুক্ত —শ্রীগণেশ লালওয়ানী ৪০.০০
২. শ্রমণ সংস্কৃতির কবিতা —শ্রীগণেশ লালওয়ানী ২০.০০
৩. ভগবান মহাবীর ও জৈন ধর্ম —শ্রীপূরণচাঁদ শ্যামসুখা ১৫.০০

English

1. Bhagavati Sutra (Text with English Translation)
—Sri K. C. Lalwani

Vol. I	(Satak 1-2)	150.00
Vol. II	(Satak 3-6)	150.00
Vol. III	(Satak 7-8)	150.00
Vol. IV	*(Satak 9-11)*	150.00

2. The Temples of Satrunjaya
—James Burgess 100.00

3. Essence of Jainism—Sri P. C. Samsukha
tr. by Sri Ganesh Lalwani 10.00

4. Thus Sayeth our Lord—Sri Ganesh Lalwani 10.00

पी-२५, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७००००७

CREATIVE LIMITED

12, Dargah Road, Post Box 16127 Cal-700 017
Phone : (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 2400098, 2471833

SURANA MOTORS PVT. LTD.

24A, Shakespeare Sarani, 84, Parijat, 8th floor
Calcutta-700071 Phone : 2477450/5264

M/s. J. KUTHARI PVT. LTD.

12, India Exchange Place, Calcutta-1
Phone : 220-3142, Resi. 475-0995

PARK PLACE HOTEL

SINGHI VILLA, 49/2, Gariahat Road,
Calcutta-700019 Phone : 475-9991/9992/7632

M/s. METROPOLITAN BOOK COMPANY

93, Park Street, Calcutta-700016
Phone : 292418 Resi. 464-2783

M/s. D. SANDEEP & CO.

78, J. S. S. Road, Ratna Deep,
Opera House, Mumbai

BOYD SMITHS PVT. LTD.

8, Netaji Subhas Road, B-3/5, Gillander House
Calcutta-700001
Ph. : (O) 220-8105/2139 (R) 244-0629/0319

NAHAR

5/1, A. J. C. Bose Road, Calcutta-700 020
Phone : 2476874 Resi 2443810

P. C. JAIN

B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur-208005
Phone : 29-5552/5955

ARBEITS INDIA

8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta-700071 Ph : 296256/8730/1029
Resi. : 2476526/6638/240526
Telex : 0212333 ARBI IN Fax : 0091-33290 174

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta-700001
Phone : 25-7927/6734/3816 Resi. : 400440

HARAKH CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi-110049
Phone : 6461075

RAJIV LALWANI
12, Duff Street, Calcutta
Phone : 2556705

G. M. SINGHVI
M/s. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta-700 001
Phone : 248-7476-8 (O) 475-4851/1483 (R)
Fax : 248-8184

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road, Calcutta-20
Phone : Resi. 455-3586

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta-700017
Phone: 242-5234/0329

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta-700071
Phone : 2428181

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta-1
Phone: 242-3870 Office Fax : 242-8621

ABHAY CHAND BOTHRA
Phone : Resi. 298-4729/298755

C. H. Spinning & Weaving Mills Pvt. Ltd.
Bothra Ka Chowk
Gangasahar, Bikaner

APRAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia, Howrah-711106
Phone : 6653666, 6652272

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi-221401 (U.P.)
Phone : Office 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Phone : 0151-522404, 25973
Fax : 05414-25378 (U.P.) 0151-61256 (Bikaner)

SUDEEP KUMAR SINGH DUDHORIA
Phone : Off. 252565/6315 Resi. : 4753133

A-D. ELECTRO STEEL CO. (PVT.) LTD.
Mfrs of Carbon Steel, Cast Steel, M. V. Steel &
all sort Alloy Steel Casting as per specification
Baltikuri (Surkhimill) Kalitala, Howrah
Office : 2203889/0714 Works : 6670485/2164
Resi. : 471-8393 Fax : 91-33-6672164

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd. Office : 11, Clive Row,
3rd Floor, Room No. 14, Calcutta-700001
Phone : Off. 242-4131/4756

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd floor,
Calcutta-700 007 India
Phone : 91-33-230 1329, 2321033
Fax : 91-33-230 2413

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta-700068
Phone : 4720610

VIJAY KUMAR BHANDAWAT
20/1, Maharshi Devendra Road
5th Floor, Calcutta-7
Phone : 239-6823, 25-0623

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowringhee Road, Calcutta-700 016
Phone : 2264943, 292194 Fax : (033) 2457390

KUSUM CHANACHUR
Prop· **CHURORIA BROTHERS**
Mfg. by—K. E. C. Food Product
P. O. Azimganj, Dist. Murshidabad
Phone : STD 03483-53234
Cal—230-0432, 231-2802

ARIHANT ELECTRIC CO.
Manufacturer of Electric Cables
21, Rabindra Sarani, Calcutta-700007
Phone : 255668

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta-700 001, India
Phone (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI Fax : (033) 220975
Resi. : 464-3235/1541 Fax : (033) 4640547

NIRMALA BOTHRA
7/1/A, Nafar Kundu Road, Calcutta-700026
Phone : 475-5503

REENA MAHENDRA BHANDARI
13, Sahakar, 'B' Road, Church Gate, Bombay-20
Phone : 285-4970 Resi.
285-3762/65, 204-1792 Office

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS P LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta-700073 Tel. (033) 262210

पर्युषण पर्वपर आपके प्रिय जनों के लिए एक शानदार उपहार !

दुनिया में पहली बार

णमोकार मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ

शेट्रा

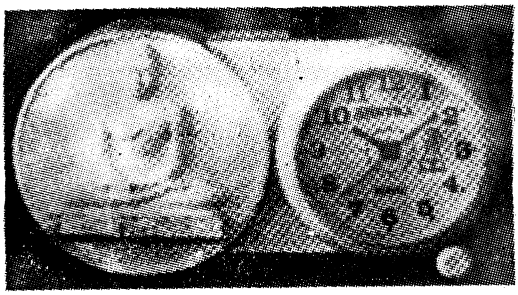

विशेषताएँ : १) आकर्षक एक्सपोर्ट मॉडेल। २) श्लोक या मंत्र की आवाज अत्यंत सुमधुर और स्पष्ट है। ३) अलार्म होते ही श्लोक या मंत्र का उच्चारण लगातार ४५ मिनट होगा। ४) यदि आप बीच में ही बंद करना चाहते है तो कर सकते है। ५) सफेद और सँडबिच यह दो आकर्षक रंगो में उपलब्द है। ६) यह घडी तीन पेन्सिल बॅटरी सेल पर चलती है। ७) उच्चतम तकनीक के कारण सतत उपयोग से भी इसकी सुमधुर ध्वनी अनेक बरसोंतक जैसे के वैसे ही रहेगी। ८) हर पूर्जे की खराबी के लिए एक वर्ष की गारंटी दी गई है। ९) इस घडी की कल्पना दुनिया में सबसे पहली बार साकार की है।

निर्माता-**शेट्रा टाईम्स (प्रा.) लिमिटेड**, दादर (पूर्व) मुंबई - ४०० ०१४

फोन ४१५६००१, ४१५६००२, ४१४५७८७ फॅक्स : ०२२ - ४१५६१५४, ४१४०९१४

वितरक : ● एशियन मार्केटिंग, मुंबई - ३ फोन : (०२२) ३४१४९४६ ● ताडदेव एम्पोरियम, मुंबई - ७, फोन : (०२२) ३०९९३६१ ● गांधी वॉच कंपनी, पुणे - २, फोन : (०२१२) ४५८८४९ ● पद्मावती सेल्स कार्पोरेशन अहमदाबाद - १, फोन : (०७९) २१११२५३ ● मोरबी क्लॉक कंपनी, सूरत - ३, फोन : (०२६१) ४२६६१५ ● ईस्टर्न टाईम एजन्सीज, कलकत्ता-१, फोन : (०३३) २२५४५१५, २२५४८९० ● वॉच ॲन्ड क्लॉक एजन्सीज, चेन्नई - १, फोन : (०४४) ५८१६२९, ५८३७१९ ● टाईम पॉईंट, दिल्ली - ३४, फोन : (०११) ७२२९५००१ ७२१९५०१ ● हितेश क्लॉक एजन्सीज, बंगलोर - ५३, फोन : (०८०) २२५७१६६ ● बॉम्बे वॉच कंपनी, इंदौर-७, फोन : (०७३१) ४३००३५, ५६४२६३ ● शंकर वॉच ॲन्ड रेडिओ हाऊस, भोपाल-१, फोन : (०७५५) ५४२७८३ ● नागपूरवाला वॉच कं. वर्धा - १, फोन : (०७१५२) ४०१०७

(महावीर या गोमटेशजी के अलावा श्लोक और मंत्र बोलनेवाली अलार्म घडियाँ गणेश, राम-सीता, श्रीकृष्ण, शिव, साई, गुरुनानक, मंगलमूर्ति गणेश, आयप्पा, मुरगा, गुरूवायुराप्पा, कालीमाता, दुर्गामाता, बालाजी, राघवेंद्र, स्वामी नारायण, अजान और चर्च प्रेअर (जीझस् क्राइस्ट्) की भी उपलब्ध हैं।)

[illegible]

[illegible]

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है।
ज्ञान के बिना चारित्र के गुण नहीं होते, गुणों के बिना मुक्ति नहीं होती
और मुक्ति बिना निर्वाण शाश्वत आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD.

Steams Agents, Handling Agents, Commission Agents
& Transport Contractors

Regd. Office :
2, CLIVE GHAT, STREET,
(N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6
CALCUTTA-700 001
Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333
Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office : 28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam-530020
Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326
Gram : BOTHRA

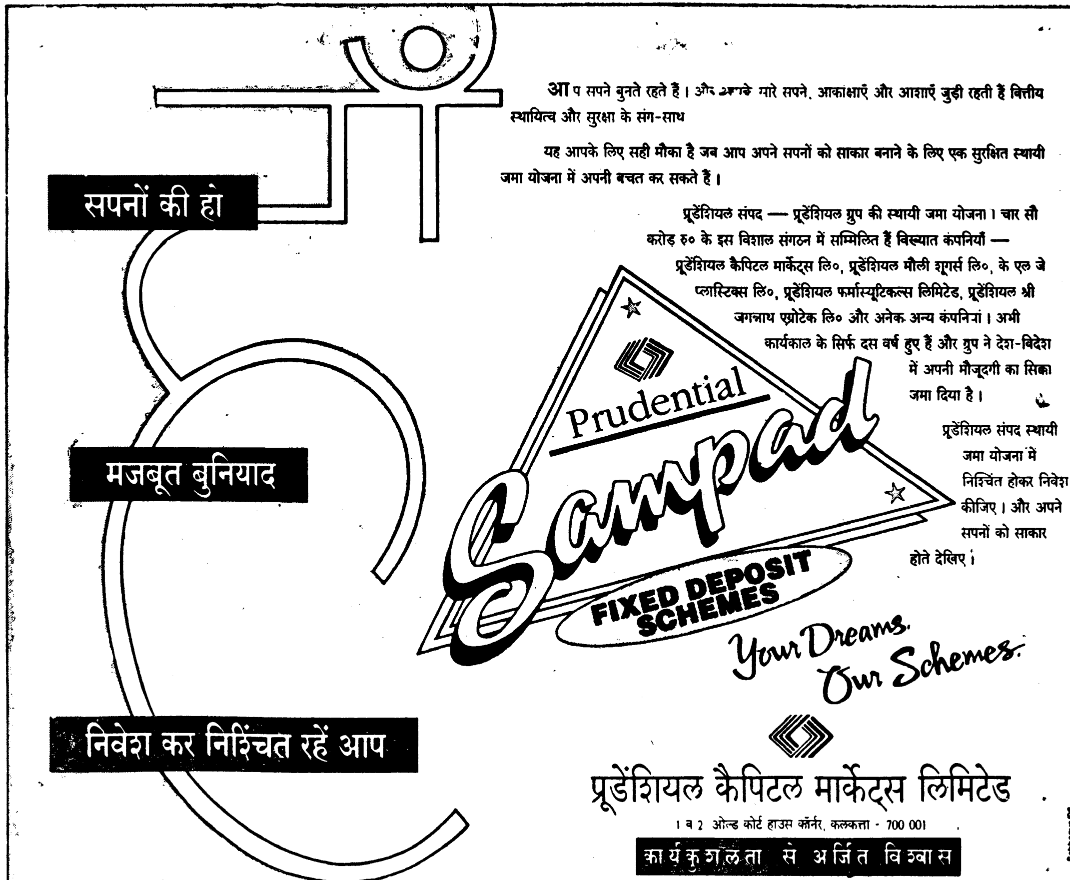
सपनों की हां
मजबूत बुनियाद
निवेश कर निश्चिंत रहें आप
आप सपने बुनते रहते हैं। और आपके सारे सपने, आकांक्षाएं और आशाएं जुड़ी रहती हैं वित्तीय स्थायित्व और सुरक्षा के संग-साथ
यह आपके लिए सही मौका है जब आप अपने सपनों को साकार बनाने के लिए एक सुरक्षित स्थायी जमा योजना में अपनी बचत कर सकते हैं।
प्रूडेंशियल संपद — प्रूडेंशियल ग्रुप की स्थायी जमा योजना। चार सौ करोड़ रु० के इस विशाल संगठन में सम्मिलित हैं विख्यात कंपनियाँ — प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लि०, प्रूडेंशियल मौली शुगर्स लि०, के एल जे प्लास्टिक्स लि०, प्रूडेंशियल फर्मास्यूटिकल्स लिमिटेड, प्रूडेंशियल श्री जगन्नाथ एग्रोटेक लि० और अनेक अन्य कंपनियां। अभी कार्यकाल के सिर्फ दस वर्ष हुए हैं और ग्रुप ने देश-विदेश में अपनी मौजूदगी का सिक्का जमा दिया है।
प्रूडेंशियल संपद स्थायी जमा योजना में निश्चिंत होकर निवेश कीजिए। और अपने सपनों को साकार होते देखिए।
Prudential
Sampad
FIXED DEPOSIT SCHEMES
Your Dreams. Our Schemes.
प्रूडेंशियल कैपिटल मार्केट्स लिमिटेड
1 व 2 ओल्ड कोर्ट हाउस कॉर्नर, कलकत्ता - 700 001
कार्यकुशलता से अर्जित विश्वास

आ. श्री कैलाससागर सूरि ज्ञान मंदिर
श्री महावीर जैन आराधना केन्द्र, कोबा
जि. गांधीनगर, पिन-382009

मानव की तृष्णा मेरु पर्वत समान है। मन की शुद्ध भावना से इन्सान अपने कर्म क्षय कर सकता है

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर हार्दिक शुभ कामनाएँ

★

★ ★

★ ★ ★

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II

New Delhi - 110049

Tel - 6445095/24011

WB/NC - 330

'Titth ayara'

Registered with the registered of Newspapers for India under No. R.N. 3018/77

Vol. XXI No. 9

December 1997

जिसने दुःख को समाप्त कर दिया है उसे मोह नही है, जिसने मोह को मिटा दिया है उसे तृष्णा नहीं है। जिसने तृष्णा का नाश कर दिया है उसके पास कुछभी परिग्रह नहीं है, वह अकिंचन है।

महावीर जयन्ती के शुभ अवसर पर उनका संदेश जन-जन तक पहुँचे इस शुभ कामना के साथ –

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3, Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666-7212/7225